© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section: Engineering and Technology

''भारतीय संस्कृति में पर्यावरण एक विमर्श''

शोधच्छात्रा
पूजा जायसवाल
नेट/जे0आर0एफ0
संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद।

भारतीय संस्कृति मूलतः वनप्रधान रही है, प्रकृति की आराधना तथा पर्यावरण का संरक्षण करना हमारा पुरातन चिन्तन है। प्रकृति के साथ सह–अस्तित्व की भावना से युक्त जीवन व्यतीत करने वाले वैदिक ऋषियों नें प्राकृतिक शक्तियों, वसुन्धरा, सूर्य, वायु, जल इत्यादि की भाव पूर्ण अभ्यर्चना की है। अथर्ववेद के भूमिसूक्त के द्रष्टा वैदिक ऋषि ने सहस्त्रों वर्ष पूर्व उद्घोषित किया था ''माता भूमिः पुत्रोंऽहं पृथिव्याः'' अर्थात् पृथ्वी हमारी माता है हम सभी उसके पुत्र हैं।

अर्थवेद में वनस्पतियों के द्वारा समस्त रोगों के शमन के उपाय बताये गये हैं। वेद, उपनिषद, काव्य, पुराणों और मिथकों में भी इनका विशद विवेचन किया गया है। गीता में पीपल को अश्वत्थ तथा वासुदेव वृक्ष कहा गया है। धार्मिक एवं मा🕐लिक अनुष्ठान, व्रत, उत्सव, यज्ञ आदि इन पवित्र वृक्षों की पूजा के बिना पूर्ण नहीं होते।

लोक विश्वास के अनुसार विभिन्न वृक्षों में विभिन्न देवताओं का निवास माना गया है। पीपल के वृक्ष में विष्णु, लक्ष्मी व पितृदेव का, आँवला में लक्ष्मी का, बेल में भगवान् शिव का, अशोक के पेड़ में इन्द्र का, कदम्ब में भगवान् वासुदेव श्री कृष्ण का, वट वृक्ष तथा पलाश में ब्रह्मा जी, नीम में शीतला माता का निवास माना गया है। रूद्राक्ष के पेड़ में त्रिनेत्रधारी भगवान शिव का निवास माना जाता है।

भारतीय शास्त्रों, वेदों, पुराणों, उपनिषदों व अन्य ग्रन्थों में सूर्य, अग्नि, जल, वायु, इन्द्र आदि की पूजा का प्रावधान किया गया है। पीपल, वट वृक्ष, तुलसी, केला आदि पादपों को भी देव–तुल्य मानकर उनकी पूजा आराधना की जाती है। कल्पवृक्ष तो मानों कामनाओं की पूर्ति का प्रतीक बन गया है। यज्ञों में आहुति देने पर इच्छित फल प्राप्त होते हैं, जिससे प्रकृति विकसित, प्रस्फुटित व प्रफुल्लित होकर मुनष्य मात्र को सभी अभिलाषाओं की पूर्ति करती है।

वनों में ही उपनिषदों की रचना हुई। हिमाचल ऋषि मुनियों की तपःस्थली रही। यही नहीं वनों में कला के उत्कृष्ट नमूने–अजन्ता एलोरा की गुफाएँ हैं। वनों में भारत की आत्मा है। महिलाएँ विभिन्न अवसरों पर विभिन्न वृक्षों की पूजा करती हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग हैं।

इन्हीं वृक्षों–वट, केला, पीपल, खेजड़ी इत्यादि को धर्म के माध्यम से सुरक्षित कर पर्यावरण को अधिक से अधिक सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है। तुलसी का वृक्ष पर्यावरण को सुवासित, स्वच्छ रखने के उद्देश्य से ही अधिकाधिक रोपित करने हेतु प्रेरित किया जाता है।

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में, वृक्षों में देवत्व का वास माना जाता है। उनकी पूजा की जाती है और उनके साथ मनुष्यों की भाँति आत्मीयता बरती जाती थी। उनके सुख दुःख का ध्यान रखा जाता था। वर्षा ऋतु में जलवर्षण के आघात से शिशिर में तुषारापात और ग्रीष्म में सूर्य की तपन से उन्हें उसी प्रकार बचाया जाता था, जिस प्रकार माता–पिता अपने बच्चों को बचाते हैं।

देवता के समान ही पीपल की पूजा अर्चना होती है। पीपल के वृक्ष का आज भी वैज्ञानिक महत्व है क्योंकि समस्त ज्ञात वृक्षों में पीपल का वृक्ष सबसे अधिक ऑक्सीजन का उत्सर्जन करता है इसलिए हमारे मनीषियों ने इसे धर्म से जोड़कर इसकी अक्षुण्णता को बनाये रखा। स्त्रियाँ व्रत रखकर उसकी परिक्रमा करती और जलार्पण करती थीं। केले का वृक्ष भी शास्त्रों में उल्लिखित है। तुलसी के पौधे की पूजा का उतना ही महत्व है जितना कि भगवान की पूजा का। तुलसी के पौधे का भी वैज्ञानिक महत्व है क्योंकि इससे बैक्टीरियानाशक रसायन उत्सर्जित होता है, जिससे वायु स्वच्छ रहती है। इसलिए आज भी लोग अपने घरों में इस पौधे को लगाते हैं। मत्स्य पुराण में लिखा गया है– दस कुएँ एक तालाब के बराबर है, दस तालाब एक झील के बराबर हैं। दस झीलें एक पुत्र के बराबर है एवं दस पुत्र एक वृक्ष के बराबर हैं।

ब्राह्मण काल में आर्यों ने प्रकृति को हमेशा पूजा है। आर्यों ने यज्ञपद्धति को स्वीकारा था, इसीलिए आज भी हिन्दू लोग परम्परागत वृक्ष, जल, वायु व अग्नि की पूजा करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि भारतीय संस्कृति में सदा ही मानवमात्र के कल्याण की परिकल्पना निहित रही है, उसने ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना को स्वीकारा है तथा ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः'' की कल्पना को सँजोया है।

पर्यावरण का प्रदूषण स्वयं मानव द्वारा जाने–अनजाने में उत्पन्न की गई समस्या है। तीव्र औद्योगीकरण, वनों के बेरोकटोक कटाव नदियों में कूडे–कचरे एवं अपशिष्ट पदार्थों का उत्सर्जन, कृषि में रसायनों का असन्तुलित प्रयोग और तेजी से बढ़ती जनसंख्या इत्यादि के द्वारा पर्यावरण को बिगाड़ने के लिए आमादा मनुष्य ही इसके लिए जिम्मेदार है। यदि ऐसा होता रहा तो समयान्तर में प्रदूषित पर्यावरण हम सभी के लिए अभिशाप बन जायेगा। आने वाली पीढ़ियाँ इस अभिशाप के लिए पूर्वजों को कोसेंगी। इसलिए मानव कल्याण को ही अपना सच्चा धर्म जानकर पर्यावरण को दूषित होने से बचाना होगा, यही पर्यावरण का सारभूत शाश्वत सत्य है।

वस्तुतः मनुष्य को अपने जीवन के सर्वाधिक कल्याणार्थ यज्ञधर्म को अपनाना चाहिए। मानव का और यज्ञ का परस्पर सम्बन्ध सृष्टि के प्रारम्भ काल से ही चलता आ रहा है। वस्तुतः अनुभव करने पर मानव जाति के जीवन का उद्‌भव यज्ञ से होता है। इस विषय का स्पष्टीकरण गीता में किया गया है।[1]

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति यज्ञ मूलक हैं। पर्यावरण प्रकृति का दैवीय स्वरूप है और यज्ञ प्रकृतिपूजा का माध्यम है। निःसन्देह भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के प्रति जो संवेदना दिखाई गयी है वह अतुलनीय हैं।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. अथर्ववेद
2. पद्यपुराण
3. मत्स्य पुराण
4. पर्यावरण एक समीक्षा
5. बृहदारण्यकोपनिषद्

[1] श्रीमद् भगवद्‌गीता 3/10–11